वृक्ष रक्षा और खेजड़ली बलिदान

लेखक
डॉ. बनवारीलाल सहू

प्रकाशक
जाम्भाणी साहित्य अकादमी

श्री गुरु जम्भेश्वराय नमः

वृक्ष रक्षा और खेजड़ली बलिदान

प्रकाशक : जांभाणी साहित्य अकादमी
सैक्टर-1, ई-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर, (राजस्थान)
Email - jsakademi@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2014, वि. सं. - 2071

मूल्य : /-

ISBN : *978-93-83415-13-7*

© : लेखकाधीन

-: मुद्रक :-

VRIKSHA RAKSHA AUR KHEJARLI BALIDAN
By Dr. BANWARI LAL SAHU
Pages : 32

दो शब्द

मनुष्य और वृक्षों का बहुत ही पुराना सम्बन्ध है। आदिकाल से ही मानव वृक्षों से सहयोग लेता आ रहा है। आज भी मनुष्य की अनेक आवश्यकताएं वृक्षों से ही पूरी होती है। ऐसे साथी को नष्ट करना मनुष्य की सबसे बड़ी मूर्खता है। पेड़ों को काटने से ही आज पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है और मनुष्य का जीवन असुरक्षित हो रहा है। एक जमाना था जब "सिर सांटे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण" को जीवन का आदर्श मानकर बिश्नोई पंथ के लोगों ने स्वेच्छा से हंसते-हंसते अपने सिर कटवा दिये थे पर अपने साथी वृक्षों को नहीं कटने दिया था। वृक्षों की रक्षा के लिए इतनी बड़ी संख्या में वृक्षों से चिपक कर अपने आप को बलिदान करने की जो घटना खेजड़ली में घटित हुई थी, वह विश्व इतिहास की एक मात्र घटना है। इस घटना से आज मानव को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है पर बड़े दु:ख की बात है कि आज मानव बड़ी बेरहमी से पेड़ों को काट रहा है। इससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकट होती जा रही है। प्रदूषण की इस बढ़ती हुई समस्या पर काबू पाने के लिए अधिक से अधिक मात्रा में वृक्षारोपण करना होगा और जीवित वृक्षों की रक्षा करनी होगी। वृक्षारोपण एवं वृक्षों की रक्षा से ही मानव जीवन को सुरक्षित एवं विकासमय बनाया जा सकता है। यह तभी हो सकता है, जब हमें वृक्षों से अत्यधिक प्रेम हो। वृक्षों के प्रति प्रेम भावना भी एक दिन में जाग्रत नहीं हो सकती। हमें बच्चों में बाल्यावस्था से ही वृक्ष प्रेम की भावना जाग्रत करनी होगी।

'खेजड़ली बलिदान' द्वारा बालकों में वृक्षों के प्रति प्रेम भावना जाग्रत करके, उन्हें वृक्षारोपण एवं वृक्षों की रक्षा के लिए तत्पर करना ही इस बाल-पोथी का मुख्य उद्देश्य है। यह पोथी बाल-हृदय में वृक्ष-प्रेम की भावना जाग्रत करने में सफल हो पायी तो लेखक का प्रयास सार्थक होगा। मैं इस बाल-पोथी के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन हेतु जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर के प्रति कृतज्ञ हूँ।

डॉ. बनवारी लाल सहू

1/73, प्रोफेसर कॉलोनी,
हनुमानगढ़ टाउन-335513 (राज.)
फोन 01552-230125

अनुक्रम

- ★ वृक्ष रक्षा और मानव
- ★ प्रथम बलिदान
- ★ बलिदान का अगला सोपान
- ★ बूचोजी का बलिदान
- ★ खेजड़ली बलिदान
  - खेजड़ली मेला
  - खेजड़ली बलिदान से प्रेरणा

वृक्ष रक्षा और मानव

वृक्ष मानव के सच्चे मित्र हैं। संसार में वृक्षों का आगमन पहले हुआ है और मानव का बाद में। मानव जब इस संसार में आया तो वृक्षों ने ही उसकी देखभाल की थी। आरम्भिक अवस्था में मनुष्य को सभी प्रकार का सहयोग वृक्षों से प्राप्त होता था। वृक्षों के सहयोग से मनुष्य का जीवन सुरक्षित हो गया और वह विकास के रास्ते पर चल पड़ा। भोजन, वस्त्र और मकान मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। आरम्भिक अवस्था में मनुष्य फल-फूल और कंद-मूल खाकर अपनी भूख शान्त करता था। पेड़ की छाल और पत्ते अपने शरीर के चारों ओर लपेट कर वस्त्र की आवश्यकता पूरी करता था। पेड़ों के पत्ते एवं टहनियों से झोंपड़ी बनाकर मनुष्य सर्दी-गर्मी से अपना बचाव करता था। इस तरह मनुष्य अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति वृक्षों की सहायता से ही करता था। इसी कारण मनुष्य वृक्षों को बहुत शक्ति मानने लग गया था। वृक्षों की शक्ति के सामने मनुष्य नत मस्तक हो गया था और उन्हें देवता मान कर उनकी पूजा करने लग गया। इस प्रकार वृक्षों में शक्ति एवं प्राण प्रतिष्ठा हो गई। वृक्ष देवता के अतिरिक्त मनुष्य अन्य देवताओं की भी पूजा करता था। धीरे-ध ीरे वृक्ष देवता के साथ भी वे ही भावनाएँ जुड़ गई, जो अन्य देवताओं के साथ थी। प्रत्येक वृक्ष की पूजा के साथ कोई न कोई धार्मिक मान्यता जुड़ गई। इसी कारण वृक्ष हमारे धर्म के अंग बन

गये। पूजा के कारण वृक्षों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा। वृक्षों पर आघात करने वालों की समाज में निंदा होने लग गई। समाज द्वारा निंदा के डर से और वृक्ष देवता के कुपित होने के भय से लोगों ने वृक्षों को काटना बन्द कर दिया। इससे धरती पर चारों ओर वृक्ष ही वृक्ष दिखाई देने लग गये। वृक्षों की अधिकता से प्रकृति का सौंदर्य बढ़ गया और मानव धरती पर सुख से रहने लग गया।

मानव जाति के विकास में वृक्षों का बहुत योगदान रहा है। जीवन की अनेक आवश्यकताएँ वृक्षों से ही पूरी होती है। विभिन्न प्रकार के फल वृक्षों से प्राप्त होते हैं। वृक्षों के बीज और पत्तियां भी खाने के काम आती हैं। जंगली जातियां वृक्षों के बीजों को पीस कर आटा बनाती हैं। इसी आटे की रोटियों से वे कई बार अपनी भूख शान्त करते रहे हैं। अकाल में लोग वृक्षों की छाल को कूट-पीस कर खाने के काम में लेते हैं। कई वृक्षों की फलियां सब्जी बनाने के काम आती हैं। आचार, तेल और चूर्ण भी मनुष्य वृक्षों से प्राप्त करता है।

अधिक समय तक वृक्षों के साथ रहने से मनुष्य का स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। इसी कारण तपोवन में रहने वाले हमारे ऋषि-मुनि बहुत कम बीमार होते थे। बीमार होने पर वृक्ष मनुष्य का इलाज करते हैं। अनेक प्रकार की औषधियां हमें वृक्षों से ही मिलती हैं। आयुर्वेदिक पद्धति का इलाज तो वृक्षों पर ही निर्भर है। वृक्षों की जड़ों, पत्तियों, छाल, बीज तथा फल-फूल आदि से अनेक प्रकार की औषधियां

बनती हैं। दांतून करना भी स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। दांतून हमें वृक्षों से ही मिलती है। बबूल एवं नीम की दांतून से दांत बहुत मजबूत एवं साफ रहते हैं।

भोजन पकाने के लिए ईंधन आवश्यक है। ईंधन की प्राप्ति हमें वृक्षों से ही होती है। जलाने के लिए लकड़ी और कोयला हमें वृक्षों से ही मिलता है। मनुष्य जब से पका हुआ भोजन खा रहा है, तभी से ही वह वृक्षों से ईंधन प्राप्त कर रहा है। मनुष्य का अन्तिम संस्कार भी वृक्षों से प्राप्त लकड़ियों से होता है।

मनुष्य के लिए मकान बहुत ही आवश्यक है। मकानों का निर्माण भी वृक्षों से प्राप्त लकड़ियों से होता हैं। मकान में उपयोग आने वाले शहतीर वृक्षों से ही मिलते हैं। दरवाजे और अलमारियों के किवाड़ भी विभिन्न वृक्षों की लकड़ियों से बनते हैं। मेज-कुर्सी और अन्य सभी प्रकार का फर्नीचर हमें वृक्षों से ही मिलता है।

कपड़ा भी मनुष्य को वृक्षों की सहायता से प्राप्त होता है। रेशमी कपड़े के लिए रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। ये कीड़े वृक्षों पर ही पलते हैं। रेशम के कीड़े वृक्षों के पत्ते खाकर कोआ बनाते हैं और इन्हीं से रेशम के धागे निकलते हैं।

किसान का तो वृक्ष अभिन्न मित्र है। खेती में काम आने वाले अनेक औजार वृक्षों से ही प्राप्त होते हैं। लोहे के औजारों की मूठ के लिए भी वृक्षों की सहायता ली जाती है। आंधी तूफान एवं सर्दी-गर्मी में वृक्ष खेत में किसान की सहायता करते हैं।

सोने के लिए चारपाई, बजाने के लिए बांसुरी, मकान पर

चढ़ने के लिए सीढ़ी और बच्चों के छोटे-बड़े खिलौने हमे वृक्षों से ही प्राप्त होते हैं। वृक्षों से प्राप्त लकड़ी से ही रेल के डिब्बे, जहाज तथा नावें बनती हैं।

दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली विभिन्न वस्तुएँ भी मानव को वृक्ष ही देते हैं। अनेक प्रकार के रंग, गोंद, स्याही और कागज आदि मनुष्य वृक्षों से ही प्राप्त करता है। मनोरंजन के लिए आज अनेक वाद्य-यंत्र काम में आते हैं। ये वाद्य यंत्र भी वृक्षों की सहायता से बनते हैं। खेल का क्षेत्र भी वृक्षों के बिना अधूरा है। क्रिकेट का बल्ला, हॉकी, बैडमिन्टन और टेनिस का रॉकेट आदि वृक्षों से ही मिलते हैं।

मनुष्य काम करते-करते तथा यात्रा में चलते-चलते थक जाता है। मनुष्य की इस थकान को भी वृक्ष ही दूर करते हैं। वृक्षों की घनी छाया में थका हुआ मनुष्य विश्राम करता है। विश्राम से उसकी थकान समाप्त हो जाती है और वह फिर अपना काम प्रारम्भ कर देता है।

वृक्ष ही मनुष्य को जीवित रखते हैं। मनुष्य ऑक्सीजन के द्वारा ही जीवित रहता है। ऑक्सीजन मनुष्य को वृक्षों से मिलती है। वृक्ष ऑक्सीजन को छोड़ते हैं और मनुष्य उसे ग्रहण करता है। मनुष्य कार्बन-डाई-ऑक्साइड को छोड़ता और वृक्ष उसे ग्रहण करते हैं। मनुष्य द्वारा छोड़ी हुई कार्बनडाई ऑक्साइड यदि वातावरण में रहे तो मनुष्य का सांस लेना कठिन हो जायेगा। मनुष्य आराम से

सांस ले सके, इसके लिए वृक्ष कार्बनडाई ऑक्साइड को ग्रहण करके मनुष्य के अनुकूल वातावरण बनाते रहते हैं। इस तरह वृक्ष मनुष्य को जीवित रखने के लिए दोहरी सहायता करते हैं।

वृक्ष धरती के कटाव को रोकते हैं। तेज वर्षा से पानी के बहाव के साथ मिट्टी भी बहने लगती है। मिट्टी के बहने से जगह-जगह गड्डे बन जाते हैं और धरती कृषि योग्य नही रहती। वृक्ष मिट्टी के इस बहाव को रोक कर धरती को कृषि योग्य बनाने में सहायक होते हैं। वृक्षों के पत्तों से खाद बनती रहती है, जो खेती के लिए बहुत लाभदायक है।

पानी को एकत्रित करने के लिए बांध बनाये जाते हैं। बाद में यह पानी बिजली उत्पादन और सिंचाई के काम आता है। इन बांधों की रक्षा भी वृक्षों से की जाती है। बाढ़ के बहाव को भी वृक्ष कम करते हैं। भयंकर बाढ़ आने पर मनुष्य वृक्षों पर चढ़कर ही अपने प्राण बचाता है।

जहां अधिक वृक्ष होंगे, वहां वर्षा भी अधिक होगी। अधिक वर्षा के कारण मनुष्य अकाल से बचता रहेगा और खेती का उत्पादन बढ़ता रहेगा। इसी उत्पादन से उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो जावेगी और उसका जीवन सुखमय बन जायेगा। इस तरह वृक्ष मनुष्य की अकाल तथा बाढ़ दोनों ही स्थितियों में सहायता करते हैं।

वृक्ष ग्रामीण लोगों का पक्का साथी रहा है। ग्रामवासी वृक्ष

के महत्त्व को अच्छी प्रकार से समझते रहे हैं। इसी कारण प्रत्येक गांव के बीच में कोई न कोई बड़ा वृक्ष अवश्य रहा है। आज भी अनेक गांवों के बीच में बड़े-बड़े वृक्ष देखे जा सकते हैं। इसी वृक्ष के नीचे बैठकर गांव के लोग फैसले करते थे। खाली समय में लोग इसी वृक्ष की छाया में बैठकर विभिन्न विषयों पर चर्चा करते रहे हैं। इस तरह यह वृक्ष एकता का माध्यम भी रहा है और समाज की खबरों का भी केन्द्र रहा है। वृक्ष अत्यधिक पवित्र माना जाता रहा है। इसी कारण गांव में जब किसी से कोई प्रतिज्ञा करवानी होती थी, तो उसके हाथ में वृक्ष की हरी पत्तियां रखी जाती थी।

वृक्ष मानव के लिए जितने लाभदायक हैं, उतने ही पुश पक्षियों के लिए उपयोगी हैं। अनेक पक्षी अपना बसेरा वृक्षों पर ही बनाते हैं। वृक्षों की छाया में ही पशु विश्राम करते हैं। वृक्षों की ओट में बैठकर ही पशु-पक्षी शिकारियों की बन्दूक से अपने प्राण बचाने में सफल होते हैं। सर्दी-गर्मी एवं आंधी-तूफान में वन्य प्राणी वृक्षों के सहारे ही जीवन की रक्षा करते हैं। वृक्षों से प्राप्त फलों को खाकर अनेक वन्य प्राणी अपनी भूख शान्त करते हैं।

वृक्ष संसार के सभी प्राणियों के लिए बहुत उपयोगी हैं। मनुष्य तो जन्म से लेकर मृत्यु तक वृक्ष पर निर्भर रहता है। जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण कार्य वृक्षों की सहायता से ही पूरे होते हैं। मानव जीवन में वृक्षों के इसी महत्त्व के आधार पर बिश्नोई पंथ के प्रवर्त्तक गुरु जाम्भोजी ने वृक्ष-प्रेम की भावना पर बल दिया था। वृक्षों को प्राणवान मान कर उन्होंने बताया कि जीवों पर दया करो

और हरे वृक्ष मत काटो। वृक्ष प्रेम की भावना के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने देश में भ्रमण करते समय कई स्थानों पर खेजड़ी के वृक्ष लगाये थे।

लोदीपुर धाम (जिला मुरादाबाद) उ.प्र.
जहां भ्रमण के समय गुरु जाम्भोजी ने खेजड़ी का वृक्ष लगाया था।

अन्य वृक्षों की तुलना में खेजड़ी अधिक लाभदायक है। यह राजस्थान की जलवायु के बहुत अनुकूल है। खेजड़ी के पत्तों से पशुओं को चारा

मिलता है। मनुष्य को फल, सब्जी के लिए सांगरी और भोजन पकाने के लिए ईंधन प्राप्त होता है। खेजड़ी से सभी प्राणियों को गहरी छाया मिलती है। इसकी जड़ें धरती में सीधे नीचे जाती है। इसीलिए इससे जुताई में कोई बाधा नहीं पहुँचती। फसल को भी इससे कोई हानि नहीं होती। कई देशी-विदेशी वृक्ष अपने आस-पास फसल पैदा ही नहीं होने देते। वे पानी और धरती की शक्ति खींचते रहते हैं पर खेजड़ी ऐसा वृक्ष नहीं है। इसकी पत्तियां बहुत ही पतली होती है। इसी कारण इसके नीचे खड़ी हुई फसल को आवश्यकतानुसार धूप मिलती रहती है। खेजड़ी के नीचे बाजरे के सिट्टे, उसकी टहनियों से मिलकर बाते करते रहते हैं। इससे धरती की उत्पादन शक्ति बढ़ती रहती है। इसी

खेजड़ी वृक्ष के नीचे लहलहाती कपास की फसल

कारण खेत में अन्य स्थानों की अपेक्षा खेजड़ी के नीचे फसल अच्छी होती है।खेजड़ी को पानी की आवश्यकता बहुत कम रहती है। इसीलिए भयंकर अकाल में भी यह वृक्ष हरा रहता है। कड़ाके की सर्दी में भी खेजड़ी जलती नहीं है। राजस्थान के लिए यह वृक्ष वरदान है। इस प्रदेश में वर्षा बहुत कम होती है और पशु पालन यहां का महत्त्वपूर्ण धन्धा है। इसी आधार पर खेजड़ी यहां के सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। उसकी इसी उपयोगिता के आधार पर इसे "राजस्थान की तुलसी" कहा जाता है।

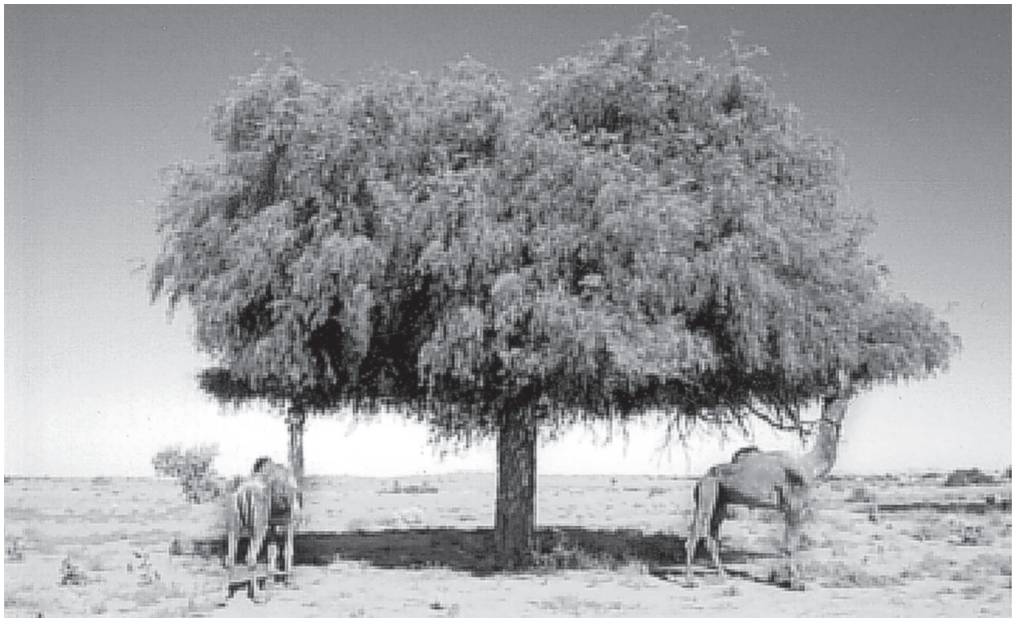

राजस्थान का जहाज कहलाने वाला ऊँट खेजड़ी के पत्तें (लुंग) से अपनी भूख शान्त करता हुआ।

प्रथम बलिदान

बिश्नोई धर्म के प्रवर्त्तक गुरु जाम्भोजी ने देश की जलवायु तथा आवश्यकता के आधार पर स्थान स्थान पर खेजड़ी के वृक्ष लगाये थे। नागौर के निकट रोटू गांव में तो उन्होंने खेजड़ियों का एक बाग ही लगा दिया था। यह आज भी वहां देखा जा सकता है। भ्रमण करते समय जाम्भोजी ने लोदीपुर (उ.प्र.) में भी खेजड़ी का एक वृक्ष लगाया था। इसी खेजड़ी के पास वर्तमान में जाम्भोजी का एक मन्दिर बना हुआ है। यहां प्रति वर्ष मेला लगता है। यह मेला बिश्नोई समाज के वृक्ष-प्रेम का ही प्रतीक है।

गुरु जाम्भोजी के बाद सन्त वील्हो जी ने भी समाज में वृक्ष-प्रेम की भावना का बहुत प्रचार-प्रसार किया था। जाम्भोजी की शिक्षा एवं वील्हो जी के प्रयास का बिश्नोई समाज पर बहुत प्रभाव पड़ा था। वृक्ष-प्रेम की भावना के कारण लोग न तो स्वयं हरे वृक्ष काटते थे और न ही दूसरों को काटने देते थे। इसी कारण बिश्नोइयों के खेतों एवं गांवों में वृक्षों की अधिकता रही है। वृक्ष-प्रेम की इसी भावना के कारण ही अनेक बिश्नोई स्त्री-पुरुष अपने प्राण देकर वृक्षों की रक्षा करते रहे हैं। वृक्षों की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करने की अनेक घटनाएं बिश्नोई इतिहास में हैं। बिश्नोई इतिहास के अलावा ऐसी एक भी घटना विश्व इतिहास में नहीं मिलती है।

वृक्षों की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करने की पहली घटना जोधपुर राज्य के रामासड़ी गांव में घटित हुई थी। यह

घटना वि.स. 1661, जेठ बदी दूज, शनिवार की है।

बच्चों, आज से लगभग चार सौ वर्ष पहले की बात है। जोधपुर राज्य के रामासड़ी गांव में अनेक बिश्नोई रहते थे। वह रजवाड़ों का युग था। यह गांव खेजड़ी वृक्षों से घिरा हुआ था। गांव के बीच में भी खेजड़ी के अनेक वृक्ष थे। इसी गांव में श्रीमती करमां एवं श्रीमती गौरां बिश्नोई रहती थी। दोनों पक्की सहेलियां थी। दोनों के आचार-विचार भी समान थे। करमां अपने गुरु जाम्भोजी के बताये हुए नियमों का पालन करती थी। वह अपनी मेहनत की कमाई खाती थी और विष्णु का स्मरण करती रहती थी। करमां पापों से डरती थी। वह किसी को भी कभी ओछा वचन नहीं कहती थी। वृक्षों से उसे बहुत लगाव था। वृक्षों की रक्षा करने का उसने पक्का प्रण कर रखा था। अपने धर्म की राह पर चलने के कारण वह किसी से डरती नहीं थी। करमां के कदमों पर ही गौरां चलती थी। एक तरह का स्वभाव होने के कारण ही उन दोनों में पक्की दोस्ती थी।

उस समय गांव के ठाकुर गांव के वृक्षों को अपनी जायदाद मानते थे। उन्हें काटने का वे अपना अधिकार समझते थे। उन्हीं दिनों गांव के ठाकुर को लकड़ियों की आवश्यकता पड़ी। उसने अपने कारिन्दों को वृक्ष काटने के लिए रामासड़ी गांव में भेजा। उस समय दूसरे लोग भी इस बात को जानते थे कि बिश्नोई अपने गांव में किसी को खेजड़ी नहीं काटने देते पर ठाकुर लोग अपने अहं के कारण दूसरों की भावना का सम्मान करना नहीं जानते थे। इसीलिए ठाकुर के कारिन्दे कुल्हाड़ियां और तलवारें लेकर रामासड़ी

गांव में पहुंच गये। इतनी बड़ी संख्या में वृक्ष काटने वालों को देखकर गांव में भी सन्नाटा छा गया। बहुत से लोग यह चर्चा करने लग गये थे कि आज वृक्षों को बचाना कठिन है। वृक्ष काटने वाले अपनी-अपनी कुल्हाड़ी लेकर वृक्षों को काटने लग गये। गांव वाले इन हिंसक लोगों का मुकाबला करने में अपने आपको असमर्थ पा रहे थे। वृक्षों की कटाई की बात गांव में आग की तरह फैल गई। इस बात की जानकारी श्रीमती करमां को भी हो गई। उसने सोचा कि यदि आज वृक्ष काटने वालों को नहीं रोका गया तो गांव के सभी वृक्ष कट जायेंगे। गांव जीवन रहित हो जायेगा और हमारा धर्म भी नष्ट हो जायेगा।

बच्चों, आपको मालूम है उस समय श्रीमती करमां ने क्या किया? करमां ने अपने मन में वृक्षों की कटायी रुकवाने की बात सोची और विष्णु की शक्ति को स्मरण कर घर से निकल पड़ी। करमां ने अपनी सहेली गौरां को बुलाया और कहा कि "आज हमारे धर्म पालन का सही अवसर है। आज हमारी परीक्षा है, हमें पीछे नहीं हटना है"। करमां ने उसे समझाते हुए कहा कि "भाग्य का लेख अमिट है, उसे कोई मिटा नहीं सकता। इसीलिए हमें अपने प्राण देकर अपने धर्म की रक्षा करनी है और वृक्षेां को बचाना है"। दोनों सहेलियां आपस में विचार विमर्श करके और गुरु जम्भेश्वर भगवान को स्मरण करके वृक्षों को बचाने के लिए गांव के चौराहे की ओर चल पड़ी। गांव वाले बड़े आश्चर्य से उन्हें देखते रहे। गांव के चौराहे पर उन्होंने वृक्ष काटने वालों को रोका

करमां और गौरां के बलिदान का दृश्य

पर वृक्ष काटने वालों पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब उन्होंने वृक्षों की रक्षा हेतु स्वेच्छा से अपने सिर सौंप दिये। देखते ही देखते दोनों वीरांगनाएँ वहां ढेर हो गयी। खून से गांव का चौराहा लाल हो गया। उनके इस बलिदान को देखकर गांव के अन्य लोगों में भी बलिदान की भावना उत्पन्न हो गई। करमां और गौरां के रक्त को देखकर वृक्ष काटने वाले भी कांप उठे। उन्होंने अपने आप को दोषी मान कर वृक्ष काटना बन्द कर दिया। वे तुरन्त वहां से रवाना हो गये।

करमां और गौरां धर्म के रास्ते पर चल कर अमर हो गई। वृक्षों की रक्षा के लिए अपने प्राण त्यागने के कारण वे स्वर्ग में पहुँच गई। करमां और गौरां के बलिदान की खबर चारों ओर फैल गई। उनके बलिदान से बिश्नोई समाज में वृक्षों की रक्षा करने की भावना और दृढ़ हो गई। इस घटना का वर्णन तत्कालीन कवि वील्होजी ने अपनी एक 'साखी' में किया है। विश्व में वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण त्यागने की यह प्रथम घटना है। इस घटना के बाद भी बिश्नोई वृक्षों की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करते रहे हैं।

बच्चों, हमें भी करमां और गौरां के बलिदान से शिक्षा लेनी है। मानव जाति की भलाई के लिए हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने हैं। किसी भी हरे वृक्ष को काटना नहीं है। हरे वृक्ष काटने वाले को हर हालत में रोकना है।

★★★

बलिदान का अगला सोपान

रामासड़ी गांव की घटना के कुछ वर्ष बाद वैसी ही घटना तिलासणी गांव में घटित हुई। उस समय तिलासणी गांव में बिश्नोइयों की आबादी अधिक थी। तिलासणी के लोग गुरु जाम्भोजी के बताये हुए नियमों का पालन करते थे। इसी गांव में मोटा खोखर रहता था। वह लोगों से कहता रहता था "मनुष्य को अपने प्राण देकर भी वृक्षों की रक्षा करनी चाहिये। मनुष्य वृक्षों की रक्षा नहीं करेगा तो और कौन करेगा? वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण त्यागने वाला सीधा स्वर्ग में जाता है"। उसकी इस प्रकार की बातों का लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा था। लोग अपने जीवन का बलिदान देकर भी वृक्षों की रक्षा के लिए तैयार थे। वृक्षों से प्रेम करने के कारण ही तिलासणी गांव में वृक्ष सुरक्षित थे।

उन दिनों गोपालदास भाटी खेजड़ला गांव में रहता था। तिलासणी गांव का क्षेत्र उसी के आधीन था। उसी गांव में किरपो भाटी रहता था। किरपो भाटी वृक्षों का दुश्मन था। वह किसी से भी नहीं डरता था। एक दिन किरपो भाटी अपने साथियों को लेकर तिलासणी गांव के पास वृक्ष काटने पहुंच गया। उसने वहां सुरक्षित खड़े खेजड़ी के वृक्षों को कटवाना प्रारम्भ कर दिया। उसी समय वृक्ष काटने की सूचना तिलासणी गांव में पहुंच गई। सूचना के मिलते ही तिलासणी निवासियों ने वृक्षों की रक्षा करने का निश्चय किया। तिलासणी के सभी लोग एकत्रित होकर

गोपालदास भाटी के दरबार में गये। उन्होंने गोपालदास भाटी से निवेदन किया कि किरपो भाटी हमारे गांव के वृक्ष कटवा रहा है। वृक्ष हमें प्राणों से भी प्रिय है। हम उन्हें किसी भी हालत में काटने

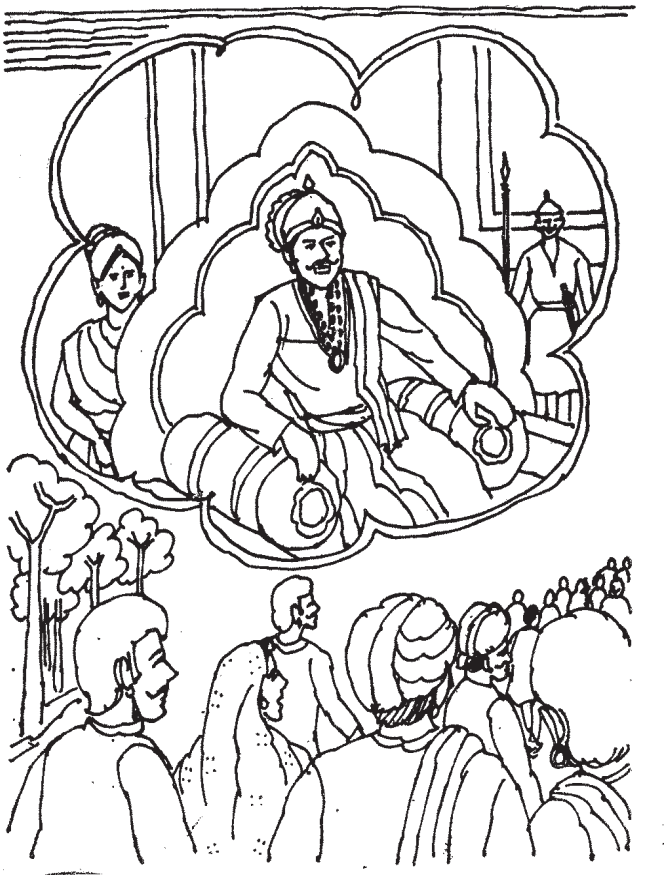

गोपाल दास भाटी के दरबार का दृश्य

नहीं देंगे। आप किरपो भाटी से कह कर वृक्षों की कटवाई रुकवा दें। गोपालदास भाटी पर इस प्रार्थना का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तिलासणी के लोगों के सामने एक विकट समस्या उत्पन्न हो गई।

उनके लिए वृक्षों की कटवाई रुकवाना आवश्यक हो गया था और गोपालदास उनकी बात मान नहीं रहा था। वृक्षों की कटवाई रुकवाने के लिए वे हिंसा का सहारा भी नहीं लेना चाहते थे। वृक्षों की कटवाई रुकवाने का कोई भी रास्ता दिखायी नहीं दे रहा था। तब लोगों ने विष्णु को स्मरण कर वृक्षों की रक्षा के लिए अपने प्राण त्यागने का निश्चय किया। इसी निश्चय के अनुसार श्रीमती खींवणी खोखर, श्री मोटा जी खोखर तथा श्रीमती नेतू नेण ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। इससे वहां सन्नाटा छा गया। वहां का वातावरण कारुणिक हो गया। गोपालदास भाटी का कठोर हृदय मोम बन गया। उसने तुरन्त वृक्षों की कटवाई रुकवा दी और किरपो भाटी को वापस बुला लिया।

इस घटना की खबर भी चारों ओर फैल गई थी। इससे अन्य लोग भी इस बात को अच्छी तरह से समझ गये कि बिश्नोई अपने क्षेत्र में वृक्ष नहीं काटने देंगे। इसीलिए सभी लोग बिश्नोइयों के गांवों के आस-पास वृक्ष काटने से डरते रहे हैं पर शासक वर्ग अपनी शक्ति के अहं में यदा-कदा वृक्ष काटने का साहस करता रहा है। शासक वर्ग के अहं के कारण ही बिश्नोइयों को वृक्ष-रक्षा हेतु समय-समय पर अपने प्राण न्यौछावर करने पड़े हैं।

★★★

बूचोजी का बलिदान

वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण त्यागने की एक महत्त्वपूर्ण घटना वि.स. 1700 में घटित हुई थी। यह घटना मेड़ता परगने के पोलावास गांव की है। इस गांव की अधिकतर आबादी बिश्नोइयों की थी। इस गांव में बूचो जी बिश्नोई रहते थे। पोलावास गांव के पास ही खेजड़ियो का घना वन था। यह वन वृन्दावन के समान सुन्दर था । इस वन को पोलावास निवासियों ने बहुत ही परिश्रम तथा प्रेम से पाला था। वन के पास ही एक तालाब था। इस तालाब से वन में रहने वाले वन्य प्राणी अपनी प्यास बुझाते थे। उस समय रैन और राजौद में राव दूदा के वंशज रहते थे। पोलावास गांव इन्हीं के आधीन था। राव दूदा को गुरु जाम्भोजी के आशीर्वाद से मेड़ते का खोया हुआ राज्य प्राप्त हुआ था। अपनी शक्ति के अंह में राव दूदा के वंशज ने ही पोलावास के वन से होली जलाने के लिए वृक्ष कटवा लिए थे। वृक्ष काटने का समाचार पोलावास गांव में पहुंच गया। समाचार पाकर पोलावास के निवसी घटनास्थल पर पहुंच गये। वहां पहुंचते ही उन्हें घटना की सच्चाई मालूम हो गई। इस घटना का समाचार उन्होंने आस-पास के गांवों में भेज दिया। समाचार पाकर बहुत बड़ी संख्या में लोग वहां पहुंच गये। वन में एकत्रित सभी लोग वृक्ष काटने वालों के बारे में अनुमान लगाने लगे। इस अनुमान से वे किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे। तब उन्होंने वृक्ष काटने वालों के पैरों के निशानों की खोज की। पैरो के निशानों के सहारे वे सभी लोग राजौद पहुंच गये। राजौद पहुंचते ही उन्हें मालूम हो गया कि वृक्ष काटने का काम राजौद

के सामन्तों ने ही किया है। वृक्ष-प्रेमियों की सारी भीड़ वृक्ष काटने वालों के सामने पहुंच गई। दोनों पक्षों में विवाद होने लगा पर वृक्ष काटने वालों की जिद्दी और कठोर आदत के कारण कोई समझौता

वृक्षों की रक्षा के लिए फरियाद करते हुए बूचोजी एचरा

नहीं हुआ। इससे लोग बड़े उत्तेजित हो गये। ऐसी स्थिति को देखकर पोलावास निवासी बूचोजी ऐचरा बहुत चिन्तित हो गये। उन्होंने सोचा

कि यदि वृक्ष काटने वाले इसी तरह अपनी जिद्द पर अड़े रहे तो न जाने कितने वृक्ष प्रेमियों को अपने प्राण त्यागने पड़ेंगे? वातावरण के तनाव को देखकर उन्होंने वृक्ष काटने वालों और वहां उपस्थित लोगों के सामने अपनी फरियाद रखी। बूचोजी की इस फरियाद का भी वृक्ष काटने वालों पर कोई प्रभाव नही पड़ा। तब बूचो जी ने वहां उपस्थित अपने परिवार के लोगों से सलाह ली। इस सलाह के अनुसार उन्होंने वृक्षों की रक्षा तथा समाज कल्याण के लिए अहिंसात्मक रूप से अपने जीवन का बलिदान देने का निर्णय लिया। अपने निर्णय के अनुसार ही उन्होंने वृक्ष काटने वालों के सरदार रतनसिंह से कहा कि आप वृक्ष काटने का यह पापमय कार्य सदैव के दिए बन्द कर दो। आपको कटाई करने का बहुत ही चाव है तो आप मेरे शरीर को काट सकते हो पर अब मैं आपको अपने जीवित रहते हुए खेजड़ी नहीं काटने दूंगा। प्राणी मात्र के शत्रु और दुष्ट रतनसिंह ने बिना सोचे समझे बूचोजी के शरीर पर तलवार चला दी।

इस तरह मानव जाति के कल्याण और वृक्षों के लिए अपने जीवन का बलिदान करके बूचोजी शहीद हो गये। बूचोजी का यह त्याग वृक्ष प्रेमियों के लिए सदैव एक प्रेरणा रहेगा। बूचोजी के इस त्याग का वर्णन कवि केसौजी ने अपनी एक साखी में किया है। यह घटना वि.स. 1700 की चैत्र बदी तीज की है। हमें बूचोजी के इस बलिदान से प्रेरणा लेकर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने हैं और उनकी रक्षा करनी है।

★★★

खेजड़ली बलिदान

बच्चो, वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण त्यागने की सबसे प्रसिद्ध घटना खेजड़ली गांव की है। यह गांव जाधेपुर से 25 कि.मी. दूर है। इस घटना को हम जब भी याद करते हैं, तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वृक्षों की रक्षा के लिए किया गया यह बलिदान विश्व में सबसे बड़ा और अनोखा है। यह घटना 'खेजड़ली के खडाणे' के नाम से प्रसिद्ध है। आज इस घटना का पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार हो रहा है।

सम्वत् 1787 में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह थे। वे अपना नया किला बनाना चाहते थे। उस समय राज्य में धन का भी अभाव था। इसलिए महाराजा की कम धन से किला बनाने की इच्छा थी। उस जमाने में चूने से ही निर्माण कार्य होता था। चूना बिना लकड़ियों के तैयार नहीं हो सकता था। इसलिए महाराजा ने चूना पकाने के लिए ईंधन की खोज में लोगों को इधर-उधर भेजा। ईंधन की खोज करने वालों ने महाराजा को बताया कि खेजड़ली गांव में बहुत से वृक्ष हैं। इन वृक्षों को काट कर ईंधन प्राप्त किया जा सकता है। महाराजा को भी यह सुझाव पसन्द आ गया। उस समय गिरधर दास भण्डारी जोधपुर का हाकिम था। महाराजा ने भण्डारी से सलाह ली और वृक्ष काटने की आज्ञा दे दी। वृक्ष कटवाने का कार्य महाराजा ने गिरधर दास भण्डारी को ही सौंप दिया। राजा की आज्ञा पर गिरधर दास भण्डारी अपने कारिन्दों और मजदूरों को लेकर खेजड़ली गांव में पहुंच गया। खेजड़ली

गांव के पास खेजड़ी के इतने वृक्ष देखकर भण्डारी का मन बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त अपने आदमियों को वृक्ष काटने की आज्ञा दे दी। कुल्हाड़ियों की आवाज सुनकर वृक्ष प्रेमी बिश्नोई बहुत बड़ी संख्या में वहां इकट्ठे हो गये। सभी लोगों ने वृक्ष काटे जाने का विरोध किया। इस विरोध को देखकर भण्डारी ने अपने मन में सोचा कि वृक्षों की रक्षा के बदले इन लोगों से धन लिया जा सकता है। ईंधन का प्रबन्ध कहीं दूसरी जगह से भी किया जा सकता है। इस तरह धन और ईंधन दोनों की समस्या हल हो सकती है। यही सब सोच कर भण्डारी ने वहां उपस्थित लोगों से कहा कि यदि तुमको वृक्ष इतने ही प्रिय हैं तो इनके बचाव के बदले तुम्हें धन देना पड़ेगा। बिश्नोइयों को भण्डारी का यह सुझाव पसन्द नहीं आया। उन्होंने भण्डारी से कहा कि यदि हम आपको रिश्वत के रूप में धन देते हैं, तो हम पर कलंक लगता है। इससे हमारे धर्म का महत्त्व भी कम होता है। हम वृक्षों की रक्षा के बदले अपने सिर दे सकते हैं पर धन देकर अपने धर्म को कलकिंत नहीं कर सकते। बहुत प्रयास करने पर भी भण्डारी को वृक्ष काटने में सफलता नहीं मिली। तब वह अपने आदमियों को लेकर वहां से चला गया।

गिरधर दास भण्डारी ने जोधपुर पहुंच कर महाराजा अभय सिंह को सारी घटना सुना दी। इस घटना को सुनकर महाराजा बड़ी दुविधा में पड़ गये। इस दुविधा से बचने के लिए महाराजा ने अनेक वर्गों के विद्वानों से सलाह ली। सभी लोगों ने महाराजा को वृक्ष न काटने की सलाह दी। महाराजा ने इन लोगों की सलाह स्वीकार कर

ली पर भण्डारी को यह सलाह ठीक नहीं लगी। अपनी शक्ति के घमण्ड में डूबे हुए भण्डारी ने राजा की आज्ञा की भी कोई परवाह नहीं की। वह अपने साथ अधिक आदमियों को लेकर फिर वृक्ष काटने वहीं पहुंच गया। भण्डारी के इस दल-बल को देखकर बिश्नोई भी पहले से अधिक संख्या में वहां पहुंच गये। खेजड़ली निवासी अपने धर्म पर अडिग थे। भण्डारी अपने घमण्ड और वृक्ष काटने की जिद्द पर अडिग था। भण्डारी की इस जिद्द को देखकर खेजड़ली निवासियों ने अपने आस-पास के गांवों में वृक्ष काटे जाने की सूचना भेज दी। सूचना मिलते ही चौरासी गांवों के बिश्नोई स्त्री-पुरुष घटना स्थल पर पहुंच गये। सभी लोगों ने वृक्ष काटे जाने का विरोध किया। इस विरोध का भी भण्डारी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और उसने वृक्ष कटवाने प्रारम्भ कर दिये। वृक्षों की कटाई रुकवाने का कोई रास्ता न मिलने पर बिश्नोइयों ने वृक्षों की रक्षा के लिए सिर सौंपने का निर्णय लिया। सभी स्त्री-पुरुष छोटे-बड़े भाग-भाग कर एक-एक वृक्ष से चिपक गये। निर्दयी एवं अहं में डूबा हुआ भण्डारी लोगों की इस शक्ति को समझ नहीं पाया। वृक्ष रक्षा के इस अहिंसात्मक विरोध का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। क्रूर कर्मचारियों ने पेड़ों से चिपके हुए लोगों पर कुल्हाड़ियों से प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया। बड़ा ही विचित्र संघर्ष था। एक ओर क्रूर और अंधी शक्ति थी। दूसरी ओर जीवों तथा वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण त्यागने वाले बिश्नोई लोग। वृक्ष-प्रेमी भाग-भाग कर वृक्षों से चिपकने लगे। कुल्हाड़ियों से कट कट कर शरीर धरती पर गिरने

लग गये। खून के फुहारें छूटने लगे। धरती लाशों से भर गई। बड़ा ही कारूणिक दृश्य था।

इस बलिदान में पुरुषों में सर्वप्रथम अणदो जी शहीद हुए। उनके बाद बिरतोजी बणियाल, चावो जी, ऊदो जी, कान्हो जी, किसनो जी एवं दयाराम आदि वीर वृक्षों से चिपक-चिपक कर शहीद हो गये। वृक्ष रक्षा के इस बलिदान में स्त्रियों का महत्त्वपूर्ण योगदान था। स्त्रियों में सर्वप्रथम अमृता, दामी, देऊ एवं चीमा आदि ने अपने जीवन का बलिदान किया। वृक्षों की रक्षा हेतु वृक्ष-प्रेमियों को चाव ही चढ़ गया था। अपने साथियों के कटने से उनके उत्साह में कोई कमी नहीं आ रही थी। वे दुगुने वेग से भाग-भाग कर वृक्षों से चिपक रहे थे। राजा के निर्दयी कर्मचारी भी उसी वेग से वृक्ष-प्रेमियों को काट रहे थे। इसी बीच इस नर संहार की सूचना जोधपुर के महाराजा के पास पहुंच गई। महाराजा अभयसिंह ने तुरन्त वृक्षों की कटवाई रुकवा दी। महाराजा ने यह भी आदेश दिया कि भविष्य में उनके राज्य में बिश्नोइयों के गांव में कोई भी हरा वृक्ष नहीं काटेगा। महाराजा द्वारा वृक्षों की कटवाई रुकवाने से पूर्व वृक्षों की रक्षा हेतु 363 स्त्री-पुरुष शहीद हो चुके थे। यह घटना वि.स. 1787 की भादो सुदि दशमी, मंगलवार को घटित हुई थी। तत्कालीन कवि गोकुल जी ने इस घटना का वर्णन अपनी एक साखी में किया है।

उस समय इस घटना की चर्चा चारों ओर फैल गई थी। इस बलिदान से सभी लोगों को यह पक्का विश्वास हो गया था कि

बिश्नोई अपने गांवों में हरे वृक्ष नहीं काटने देंगे। इसी कारण उस समय अनेक राजाओं ने बिश्नोई गांवों में वृक्ष न काटने के परवाने जारी कर दिये थे।

खेजड़ली मेला

जोधपुर से लगभग पच्चीस किलोमीटर दूर खेजड़ली गांव है। इसी गांव के पास ही वह शहीद स्थल है, जहां वृक्षों की रक्षा के लिए तीन सौ तिरेसठ स्त्री-पुरुषों ने अपने प्राणों का बलिदान किया था। इसी शहीद स्थल पर गुरू जम्भेश्वर भगवान का एक छोटा सा मन्दिर है। इसके पास ही जाल का एक पुराना पेड़ है। इस पेड़ के पास एक छोटा सा तालाब था, जिसे अब पक्का बना दिया है। खेजड़ली बलिदान की घटना सम्वत् 1787 की है पर शिक्षा के अभाव एवं प्रचार-प्रसार के साधनों की कमी के कारण इतने बड़े बलिदान का प्रचार-प्रसार उतना नहीं हो पाया, जितना होना चाहिए था। इसी बात को ध्यान में रखकर बिश्नोई समाज ने सन् 1978 में खेजड़ली बलिदान के शहीदों को सामूहिक श्रद्धांजलि देन का निर्णय लिया। इसी आधार पर सन् 1978 की भाद्रपद शुक्ला दशमी को शहीद स्थल पर प्रथम मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में वृक्ष प्रेमियों द्वारा शहीदों की स्मृति में तीन सौ तिरेसठ पेड़ लगाये गये। अब समाज की ओर से यहां शहीदों की स्मृति में एक शहीद स्मारक भी बना दिया गया है। तब से प्रतिवर्ष भादो सुदि दशमी को

मेले का आयोजन होता है। यह मेला बिश्नोई समाज के वृक्ष-प्रेम का प्रतीक है। इस मेले में देश के कोने-कोने से वृक्ष प्रेमी पहुँचते हैं। भारतीयों के साथ-साथ दूसरे देशों के वृक्ष प्रेमी भी यहां आते हैं। मेले में रात्रि को जागरण एवं प्रातः काल हवन होता है। हवन के बाद खुला अधिवेशन होता है, जिसमें खेजड़ली बलिदान एवं वृक्षों के महत्त्व पर चर्चा होती है। मेले में आने वाले लोग शहीदों की याद में खेजड़ी का वृक्ष लगाते हैं। कुछ लोग यहां से खेजड़ी का पौधा भी अपने साथ लाते हैं। यह मेला मानव समाज में वृक्ष-प्रेम की भावना के विकास में अत्यधिक सहायक हो रहा है।

खेजड़ली बलिदान से प्रेरणा

पेड़ों की रक्षा के लिए गुरु जाम्भोजी ने जो शिक्षा दी थी, उसका बिश्नोई समाज पर बहुत प्रभाव रहा है। इसी कारण बिश्नोई समाज अपने प्राणों का बलिदान करके भी वृक्षों की रक्षा करता रहा है। बलिदान की इन घटनाओं से अन्य लोगों ने भी प्रेरणा ग्रहण की है।

हिमालय पर स्थित वृक्ष, वहां के लोगों के जीवन के आधार हैं। आज से कुछ वर्ष पूर्व जब इन वृक्षों को काट कर वहां की पहाड़ियों को नंगा करना प्रारम्भ किया, तब वहां के ग्रामीण लोगों ने इस का विरोध किया। इस क्षेत्र के ग्रामीण लोगों ने वृक्ष-रक्षा के लिए बिश्नोई समाज द्वारा अपनाये गये रास्ते का अनुकरण किया। यहां के ग्रामीण स्त्री-पुरुषों ने सामूहिक रूप से वृक्ष-रक्षा

के लिए एक अभियान छेड़ा। यहां की ग्रामीण स्त्रियां इन वृक्षों से चिपक जाती थी और वृक्षों को कटने से बचा लेती थी। यही अभियान चिपको आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध है। आधुनिक समय में इस आन्दोलन के नेता श्री सुन्दर लाल बहुगुणा माने जाते हैं। वास्तव में तो चिपको आन्दोलन का जन्म उसी दिन हो गया था, जिस दिन बिश्नोइयों ने वृक्षों की रक्षा के लिए उनसे चिपक कर अपने प्राण दे दिये थे। आज जो 'चिपको आन्दोलन' चल रहा है, वह बिश्नोई समाज द्वारा प्रारम्भ किये गये चिपको आन्दोलन की एक कड़ी है। गुरु जाम्भोजी ही इस आन्दोलन के प्रेरक रहे हैं।

'चिपको आन्दोलन' की प्रेरणा से ही दक्षिण भारत में 'अप्पिको आन्दोलन' प्रारम्भ हुआ था। इस आन्दोलन के द्वारा कुछ ग्रामीण युवक-युवतियों ने वृक्षों से चिपक कर, वृक्षों को कटने से बचा लिया था। इस आन्दोलन का प्रभाव भी दूर-दूर तक हुआ था। इन आन्दोलनों से खेजड़ली बलिदान के प्रचार-प्रसार का क्षेत्र भी बढ़ता जा रहा है। खेजड़ली बलिदान के प्रचार-प्रसार का क्षेत्र जितना बढ़ेगा, उतनी ही वृक्षों की रक्षा अधिक होगी।

आज विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मानव जीवन को बहुत बदल दिया है। कल कारखानों और तेज गति के वाहनों से मानव का जीवन सुखमय बन गया है पर इनसे निकलने वाले धुएँ से वातावरण दूषित हो गया है।

आज का मनुष्य अपनी सुख-सुविधा एवं स्वार्थ के लिए वृक्षों की अन्धा धुन्ध कटाई कर रहा है। इससे ऑक्सीजन एवं

कार्बन-डाई-ऑक्साईड का संतुलन बिगड़ गया है। इसी कारण आज मनुष्य का सांस घुट रहा है। धुएं युक्त वातावरण में मनुष्य का जीवित रहना कठिन हो रहा है। इस कठिनाई का मुकाबला वृक्षों से ही किया जा सकता है। इस धरती पर अधिक से अधिक वृक्ष होंगे तो वे उतनी ही मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ेंगे और कार्बन-डाई-ऑक्साईड ग्रहण कर लेंगे। ऐसा होने से मनुष्य आराम से सांस ले सकेगा।

वृक्षों में प्राण हैं। वे हमारी तरह ही सुख-दुःख को अनुभव करते हैं। अन्य जीवों की तरह ही हमें वृक्षों पर दया करनी है। उन्हें काट कर अपने ऊपर जीव-हत्या का पाप नहीं लगाना है। हमें आज खेजड़ली बलिदान से प्रेरणा लेकर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिये। वृक्ष लगाकर हम आज मानव जाति की अधिक से अधिक सेवा कर सकते हैं।

आज विश्व में सबसे विकट समस्या प्रदूषण की है। प्रदूषण की इस समस्या से विश्व को वृक्ष ही बचा सकते हैं। इसलिए हमें चाहिये कि हम अधिक से अधिक वृक्ष लगाये और उनकी रक्षा करें। हम न तो स्वयं हरा वृक्ष काटें और न दूसरों को काटने दें। वृक्षों के लिए प्राण त्यागने वाले शहीदों की याद में भी हम अधिक से अधिक वृक्ष लगायें और उनकी रक्षा करें। वृक्षों की रक्षा करके ही हम सच्चे अर्थों में शहीदों को श्रद्धांजलि दे सकते हैं। खेजड़ली बलिदान आज विश्व में प्रेरणा स्रोत के रूप में जगमगा रहा है। आओ हम आज प्रतिज्ञा करें कि खेजड़ली बलिदान से प्रेरणा लेकर अधिक से अधिक वृक्ष लगायें और प्रदूषण के खतरे से विश्व को बचावें।

★★★